संपादकीय

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नित नए परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं। जिनमें शिक्षा का केंद्र बालक तथा उसे शिक्षा प्रदान करने वाली तमाम व्यवस्थाएँ शामिल हैं, जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं। इस कड़ी में संचार की दुनिया अर्थात् मीडिया की अहम भूमिका है, जिसमें विशेषकर डिजिटल मीडिया पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है। इस प्रकार, पूरा शिक्षा तंत्र डिजिटल शिक्षा पर कार्य कर रहा है। ऐसे में जीवन की गुणवत्ता कैसे स्थापित की जाए कि मानव विकास द्वारा मानव अपनी क्षमताओं को बढ़ाकर उपलब्ध अवसरों का लाभ उठा सके। इसी तारतम्य में संचार माध्यमों की दुनिया में मानव जीवन के वैविध्य को दर्शाते हुए उषा शर्मा के लेख 'जीवन की गुणवत्ता और संचार की दुनिया' से इस अंक की शुरुआत की गई है।

मानव विकास एवं मीडिया में भाषा की अहम भूमिका होती है। परंतु बालकों में भाषाई विकास के दौरान की गई अशुद्धियाँ एक गंभीर समस्या के रूप में उभरी हैं। इसी भाषागत समस्या एवं चुनौती पर चित्ररेखा एवं मनोज कुमार का लेख 'भाषा संबंधी अशुद्धियाँ—आज एक गंभीर समस्या एवं चुनौती' पर केंद्रित है जो भाषागत अशुद्धियों के कारण व परिणामों तथा उपचारों से रूबरू कराता है।

विद्यार्थियों के भाषागत विकास में पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य सहायक सामग्रियों का भी उपयोग किया जाता है, जिसमें समाचार-पत्रों की अहम भूमिका होती है, जो सरल एवं सुलभ उपलब्ध तो होते ही हैं, साथ ही स्थानीय स्तर से वैश्विक स्तर की जानकारी भी प्रदान करते हैं। इस प्रकार, हिंदी भाषा के विकास में हिंदी समाचार-पत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। साथ ही, विद्यार्थियों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ने में समाचार-पत्र एक महत्वपूर्ण साधन हैं। इन्हीं साधनों की विद्यार्थियों एवं विद्यार्थी-शिक्षकों तथा समुचित शिक्षा व्यवस्था में उपयोगिता पर राजपाल सिंह यादव का लेख 'हिंदी समाचार-पत्र और शिक्षा' प्रकाश डाल रहा है।

संदीप कुमार एवं कमल ने अपने लेख 'पर्यावरणीय चेतना रूपी शिक्षा' में पर्यावरण संबंधी समस्याओं, उनके कारण एवं समाधान का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण चेतना जाग्रत करने हेतु विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर अर्थात् प्रकृति का अवलोकन, भ्रमण, देशाटन आदि में भाग लेना होगा। शिक्षा पर्यावरणीय चेतना के साथ-साथ सामाजिक चेतना पर भी ज़ोर देती है। जिसमें जेंडर संवेदनशीलता प्रमुख है। इसी संवेदनशीलता को पाठ्यपुस्तकों में खोजने का प्रयास रेखा रानी कपूर ने अपने शोध-पत्र 'जेंडर समावेशन और पाठ्यपुस्तकें' में किया है। इस शोध-पत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तर की हिंदी की पाठ्यपुस्तकों और उच्चतर माध्यमिक स्तर की अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तकों में जेंडर समावेशन का विस्तृत विवेचन किया गया है। साथ ही, जेंडर समावेशन को पाठ्यपुस्तकों के अभिन्न व

अविच्छिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत करने का सुझाव भी दिया गया है।

'मुस्लिम बालिकाओं की कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों में भागीदारी पर अध्ययन' नामक शोध-पत्र बालिका शिक्षा, विशेषकर अल्पसंख्यक वर्ग एवं पिछड़े वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा पर आधारित है। यह शोध-पत्र दिव्या बरनवाल एवं मोना यादव द्वारा किए गए शोध अध्ययन पर आधारित है। शोध अध्ययन से पाया गया कि ये विद्यालय बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने का उन्मुक्त स्थान हैं, जहाँ पर वे अपनी क्षमताओं एवं कौशलों का विकास कर गुणवत्तापूर्ण जीवनयापन कर सकें। परंतु इन विद्यालयों में भौतिक संसाधनों एवं शिक्षकों की कमी पाई गई। रश्मि श्रीवास्तव का लेख 'संधारणीय एवं विकास के संदर्भ में महिला शिक्षा संबंधी चुनौतियाँ व समाधान' हमारी शैक्षिक व्यवस्था में महिला शिक्षा के प्रति चुनौतियों और सतत विकास के संयोजन पर केंद्रित है।

दिनेश कुमार गुप्ता एवं साजिदा सादिक का लेख 'जॉन डीवी की शिक्षा दृष्टि और उसकी प्रासंगिकता' आधुनिक शिक्षा के जनक जॉन डीवी की विचारधाराओं पर आधारित है। यह लेख डीवी की बाल-केंद्रित शिक्षा के साथ-साथ शिक्षण विधियों, जैसे—क्रियात्मक पद्धति, प्रगतिशील विद्यालय, क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम पद्धति आदि का खुलासा करता है।

संजय कुमार सुमन का लेख 'स्कूली बच्चों के बीच चर्चा में प्रेमचंद' प्रसिद्ध साहित्यकार, समाजसेवी एवं स्वतंत्रता सेनानी प्रेमचंद पर आधारित है। लेख में सुझाव दिया गया है कि प्रेमचंद के विराट, व्यापक और महान व्यक्तित्व के माध्यम से विद्यार्थियों में चर्चा कराई जानी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को साहित्य, भाषा, समाज, शिक्षा और इतिहास के आपस में जुड़े हुए तथ्यों एवं विचारों को चर्चाओं से सीखने का अवसर मिल सके।

एक रोचक अनुभव 'अच्छा! सर आप अंग्रेज़ी पढ़ाना चाह रहे थे' पर केवलानंद काण्डपाल का लेख शिक्षकों की सीखने-सिखाने की गतिविधियों की तैयारी पर आधारित है। इसमें बच्चों की सीखने की पूर्व तैयारी का शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। दिशा नवानी का लेख 'स्कूलों में आकलन पर पुनर्चिंतन' आकलन के दो तरीकों यथा सतत एवं समग्र मूल्यांकन तथा साल के अंत में ली जाने वाली परीक्षा की प्रकृति की पड़ताल करता है। जितेन्द्र कुमार पाटीदार का लेख 'शिक्षक शिक्षा में सतत एवं समग्र मूल्यांकन' शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों में उच्च स्तर के चिंतन कौशल विकसित करने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा विद्यार्थी-शिक्षकों का सतत एवं समग्र मूल्यांकन करने पर आधारित है। जिसमें शिक्षक शिक्षा में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के प्रयोग से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख एवं शोध-पत्र प्रकाशन हेतु भेजेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति